

भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास



हमें बताया जाता है कि भारत को स्वतंत्र हुए 65 वर्ष हो चुके हैं। प्रश्न यह है कि क्या हम सही मायनों में आज़ाद हो चुके हैं? या हमारी गुलामी को 565 साल हो चुके हैं? प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक: https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4Tzk2Y3hIRnoxTTg/edit?usp=sharing

एक झूठ हमें बचपन से पढ़ाया जाता है कि भारत की खोज वास्को डी गामा ने की। यह झूठ कुछ इस तरह से पढ़ाया जाता है जैसे उससे पहले भारतवर्ष इस दुनिया में नहीं हुआ करता था! इस झूठ के नायक 'वास्को डी गामा' की जीवनी हमें नहीं पढ़ाई जाती कि वह कौन था और उसका चरित्र किस दर्जे का था। वास्को डी गामा पुर्तगाल का निवासी था। पेशे से वह एक लुटेरा था जो शक्ति के बल पर लोगों को गुलाम बना लिया करता था। 15वीं शताब्दी तक यूरोप में एक भी ऐसा देश नहीं था जिसे आप समृद्ध कह सकें। पूरे यूरोप में भयंकर गरीबी और अराजकता थी। इन देशों का एक ही मुख्य व्यवसाय था, दूसरे देशों को लूटना! इनमें पुर्तगाल और स्पेन अक्ल थे। वास्को डी गामा की तरह स्पेन का भी एक बहुत बड़ा लुटेरा था जिसका नाम था 'कोलंबस', जिसने अमरीका को लूटा और वहाँ के मूल निवासी 'रेड इंडियन' को दस करोड़ की तादाद में काटा! लूट के माल की हिस्सेदारी को लेकर अक्सर स्पेन और पुर्तगाल में खूनी टकराव हुआ करता था जिससे परेशान होकर दोनों देश के राजा और लुटेरे (उद्योगपति नहीं थे उस समय) पोप 'छठे' के पास पहुँचे, सन 1492 में। पोप ने एक अध्यादेश जारी किया और विश्व को दो हिस्सों में बाँट दिया - पूर्व और पश्चिम। पूर्वी खेमे में थे भारत, मलेशिया, चीन, जापान, कोरिया आदि तथा पश्चिमी खेमे में थे अफ्रीका, उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका। स्पेन को कहा गया कि वह पश्चिमी हिस्से में लूटमारी करे तथा पुर्तगाल को कहा गया कि वह पूर्वी हिस्से में लूटमारी करे। यही कारण था कि कोलंबस ने अमरीका और ब्राज़ील को लूटा तथा वास्को डी गामा भारत पहुँचा केवल लूटने के मकसद से।

सन 1498 में पहली बार वास्को डी गामा भारत उतरा, कालीकट (केरल) में। उस समय वहाँ का राजा हुआ करता था 'झामोरिन'। झामोरिन ने भारतीय सभ्यता के अंतर्गत वास्को डी गामा का स्वागत किया क्योंकि वास्को ने अपनी पहचान एक व्यापारी के रूप में दी थी। कुछ ही दिन बाद वास्को डी गामा ने धोखे से झामोरिन की हत्या करवा दी और खुद कालीकट का सर्वेसर्वा बन गया। उसके बाद 7-8 वर्षों तक उसने आसपास के इलाकों को जमकर लूटा। कालीकट से जाने वाले हर जहाज़ को भारी कर चुकाना पड़ता था जिसे न देने पर वास्को के आदमी उस जहाज़ को डुबो देते थे! पहली बार में वास्को 7 जहाज़ सोने की मुद्राओं से भरकर पुर्तगाल ले गया। फिर वह दूसरी बार आया और 12 जहाज़ भरके सोना ले गया! इसके बाद वह फिर तीसरी बार आया लेकिन चौथी बार आने से पहले ही वह मर चुका था। इस लूट के बाद यूरोप के लिए भारत की ओर जाने वाला लूट का रास्ता खुल चुका था। पुर्तगालियों के बाद आए फ्रांसिसी और डच लोग जिनके द्वारा स्थापित गुलामी का जीता जागता उदाहरण है भारत का एक राज्य 'गोवा' जहाँ आज भी बहुत मुश्किल से ही आपको भारतीय सभ्यता कहीं दिखाई पड़ेगी!

लूट के सिलसिले को जारी रखते हुए आए अंग्रेज़। अंग्रेज़ों के आने का तरीका पुर्तगालियों, फ्रेंच और डच लोगों से थोड़ा भिन्न था। वे व्यापार के बहाने से भारत में दाखिल हुए। सबसे पहले ईस्ट इंडिया कंपनी के छह अधिकारी भारत में आए जिनमें से एक 'जेम्स कूपर' ने सूरत के नवाब से एक बंगला बनाने के लिए जगह माँगी। जगह मिली, व्यापार स्थापित हुआ और कुछ वर्षों के बाद सूरत के नवाब को मार दिया गया और फिर सूरत पर झंडा लगा ईस्ट इंडिया कंपनी का, सन 1612 में। यही पैतरा अपनाया गया कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास, आगरा, बरेली में। अगले डेढ़ सौ वर्षों तक अंग्रेज़ इसी नीति पर चलते रहे और भारत में किसी को भी इस बात की भनक नहीं थी कि यही अंग्रेज़ व्यापार

करने नहीं बल्कि अपना साम्राज्य स्थापित करने आए हैं। सबसे पहली बार भनक लगी बंगाल के नवाब 'सिराजुद्दौला' को, जिसने कसम खाई थी कि ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल में घुसने नहीं दिया जाएगा।

बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला एक अच्छा प्रशासक था। वह सन 1756 में बंगाल का नवाब बना। उसके नाना उसको एक हिदायत दे कर गए थे कि किसी का भी भरोसा करना लेकिन अंग्रेजों का कभी नहीं। यह बात उसके जहन में काबिज थी। कंपनी ने कई बार सिराजुद्दौला से संधि करने की कोशिश की लेकिन वह कभी नहीं माना। कुछ युद्ध भी हुए परंतु अंग्रेज हमेशा हारे। सिराजुद्दौला की सबसे बड़ी भूल थी कि वह उन्हें छोड़ देता था जिसका खामियाजा उसे बाद में भुगतना पड़ा! 1757 में अंग्रेज अधिकारी 'रॉबर्ट क्लाइव' ने सिराजुद्दौला को युद्ध की चुनौती दे डाली। इससे पहले उसने ब्रिटिश संसद में कुछ सैनिक मंगवाने के लिए अर्जी दी थी जो खारिज हो गई थी क्योंकि ब्रिटेन के लगभग सभी सैनिक फ्रांस में नेपोलियन बोनापार्ट के खिलाफ युद्ध कर रहे थे। रॉबर्ट के पास केवल 300 सैनिक थे जो सिराजुद्दौला के 18000 सैनिकों के आगे धूल के समान थे। इसके बाद उसने एक तरकीब निकाली और सिराजुद्दौला के सेनानायक 'मीर जाफर', दरबारी और जगत सेठों (महताब चंद, स्वरूप चंद, ओमी चंद और राय दुर्लभ) को खरीद लिया और वादा किया कि वह सिराजुद्दौला को मरवा दे तो उसे बंगाल का नवाब बना दिया जाएगा।

रॉबर्ट क्लाइव के कहने पर सिराजुद्दौला के 18000 सैनिकों ने रॉबर्ट क्लाइव के 300 सैनिकों के आगे आत्मसमर्पण कर दिया! उसके बाद रॉबर्ट क्लाइव ने उन सैनिकों को कलकत्ता के फोर्ट विलियम्स में 10 दिनों तक भूखा प्यासा रखा और ग्यारहवें दिन उन सबकी हत्या कर दी! मीर जाफर के बेटे मीरन ने

सिराजुद्दौला को मार दिया और मीर जाफर बंगाल का नवाब बन गया। ईस्ट इंडिया कंपनी के दिन इसी घटना के बाद से बदल गए और भारत की अस्मिता के भी! भारतीय इतिहास में शोषण और पराभव का दौर इसी घटना के बाद से आरम्भ हुआ क्योंकि इस घटना के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी की शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती गई और इसे बढ़ाने वाले थे भारत के अपने ही लोग, मीर जाफर और महताब चंद जैसे! अगले दो सौ सालों तक की गुलामी हमें न झेलनी पड़ती, आठ लाख वीर वीरांगनाओं का बलिदान न देना पड़ता, यातनाओं और अपमान का दौर न झेलना पड़ता और हमने ईस्ट इंडिया कंपनी को 1757 में ही मार कर यहाँ से भगा दिया होता अगर इतिहास में वो एक व्यक्ति न होता तो, 'मीर जाफर'! रॉबर्ट क्लाइव ने खुद अपनी डायरी में लिखा है कि जिस दिन कलकत्ता से मुर्शिदाबाद जाते वक्त भारतीयों का आत्मसम्मान अगर गलती से भी जाग जाता तो हम इंग्लैंड तो दूर बंगाल से भी बाहर साबुत न निकल पाते!

वो एक मीर जाफर था जिसने एक ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत में बुलाकर भारत को 200 वर्षों तक गुलाम बनवाया लेकिन आज संसद में सैकड़ों मीर जाफर हैं जो दिन रात इसी काम में जुटे हैं! जब तक ये सत्ता से बाहर रहते हैं तब तक विदेशी कंपनियों का विरोध करते हैं और जैसे ही कुर्सी हाथ लगती है तो विदेशी कंपनियों के आगे लेट जाते हैं! जब भी कोई मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री बनता है तो सबसे पहला काम करता है विदेशी कंपनी के साथ समझौता कर अपने प्रदेश में घुसाना। एक उदाहरण दें तो अभी कुछ ही दिनों पहले उत्तर प्रदेश की जनता ने मिलकर समाजवादी पार्टी को जिताया। यह वही पार्टी है जिसका अजेंडा शुरू से विदेशी कंपनियों और अंग्रेजियत के खिलाफ रहा! जैसे ही अखिलेश यादव मुख्यमंत्री बने तो सबसे पहला काम किया विदेशी कंपनियों को उत्तर प्रदेश में लेकर आए जैसे भारत के सबसे अधिक जनसंख्या वाले प्रदेश के

लोग मिलकर भी अपनी अर्थव्यवस्था नहीं संभाल सकते! वास्तव में विदेशी कंपनियाँ भारत की संसद में अपने दलाल ढूँढती है! जब इतने मीर जाफर इतनी सुलभता से उपलब्ध हैं तो फिर रोबर्ट क्लाइव को क्यों भेजा जाए?

भारतीय इतिहास के सबसे ऐयाश आदमी को भारत का प्रथम प्रधानमंत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ! माउन्टबैटन की पत्नी के साथ उसके संबंध दुनिया के सामने एक खुला सच है जिस पर भारत और इंग्लैंड में कई लेख भी प्रकाशित हो चुके हैं पूरे प्रमाण के साथ। William Wilberforce नाम के एक सांसद ने ब्रिटिश संसद में कहा था कि नेहरू शरीर से तो हिन्दुस्तानी है परंतु दिमाग से खरा अंग्रेज़ है! जब माउन्टबैटन को यह चिंता सताने लगी कि आज़ाद भारत में ब्रिटिश कंपनियों की क्या स्थिति होगी तो नेहरू ने उसे आश्वासन दिया कि 127 ब्रिटिश कंपनियों में से 126 भारत में ही रहने दी जाएँगी, केवल ईस्ट इंडिया कंपनी को भेजना होगा क्योंकि उसके विरुद्ध रोष का वातावरण था भारत में। दूसरी बात यह कि भारत की आज़ादी ली हुई आज़ादी नहीं बल्कि अंग्रेज़ों द्वारा हमें दी गई आज़ादी है जिसका मतलब है कि जब वे चाहेंगे आज़ादी वापस ले लेंगे। 1946 में सांसदों के मत से ब्रिटेन में Indian Independence Act पारित हुआ था जो कि एक कानून है जो कभी भी बदला और तोड़ा जा सकता है। नेहरू जैसे मीरजाफरों ने इस आज़ादी को सहर्ष स्वीकार किया और Transfer of Power Act में भारत की गर्दन को कई जगह अंग्रेज़ों के हाथों में दे दी। यही नहीं भारत का वर्तमान संविधान जिस आधार पर टिका है वो है Government of India Act, जो भारत में अंग्रेज़ों के हितों की रक्षा के लिए बनाया गया था। इन सब बातों को यदि ध्यान में रखा जाए तो कैसे कहा जा सकता है कि भारत स्वतंत्र हो चुका है?

भारत को गुलाम बना कर रखने के लिए जो विदेशी शक्तियां काम कर रही हैं उनका एक ही ध्येय है कि विश्व के सबसे अधिक युवाशक्ति वाले देश भारत में अब कोई भगत सिंह, सुभाषचंद्र बोस, विवेकानंद, महाराणा प्रताप जन्म न ले! क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो भारत फिर से अपने स्वर्णिम युग में पहुँच जाएगा! इसके लिए वे क्या कर रहे हैं? इसके लिए उनके पास सबसे शक्तिशाली औज़ार है 'टेलीविजन'। कई घरों में तो माताएँ खुद बच्चों के साथ बैठकर परिवार को तोड़ डालने वाले धारावाहिक देखती हैं। उधर एकता कपूर पैसे बटोरती है और यहाँ घरों के टूटने के साथ बच्चों के संस्कार बिगड़ते हैं! यह वो यंत्र है जो बचपन से ही बच्चों के मन पर अपना विष छोड़ देता है। मनोरंजन के नाम पर जो परोसा जाता है वह पूर्णतया संस्कारविहीन जानकारी होती है। युवावर्ग से बाहर निकालते हुए एक आंकड़े के अनुसार एक बच्चा 5 घंटे रोज़ाना के औसत से 30000 हत्या और 72000 अश्लील दृश्य देख चुका होता है! और सबसे मजे की बात कि ऐसे बच्चों से उनके माता पिता इंजिनियर, डॉक्टर, वैज्ञानिक बनने की उम्मीद करते हैं। अगर बच्चा इनमें से कुछ बन भी गया तो जिस दुश्चरित्र का वो मालिक होगा, वह उस बच्चे से बनावट में हेरफेर, रूपए को मरीज़ से अधिक महत्व तथा अधिक पैसों के लिए देश छोड़कर विदेश में अनुसन्धान ही कराएगा अर्थात् हर तरफ से नुकसान! क्या ऐसी ही संतान की आशा में आप इतना समय गंवाते हैं? यही वजह है कि दिल्ली जैसे शहर में जहाँ सबसे अधिक टीवी देखा जाता है, सबसे अधिक छेड़छाड़ करने के मामले से लेकर सबसे अधिक बलात्कार के मामले होते हैं जिसके सीधे जिम्मेदार हम सब हैं!

“मैं न ही वोट मांगने आया हूँ और न ही नोट। वैसे तो आपके यहाँ कई लोग आते होंगे, भाषण देते होंगे और कहते होंगे कि इस पर मोहर लगा दीजियेगा। मैं वो सब करने नहीं आया हूँ और न ही कभी आऊँगा! मैं तो सिर्फ आपसे समयदान मांगने आया हूँ। समयदान यह है कि आप अपनी जिंदगी में से सिर्फ

एक घंटा निकाल लीजिए। इस एक घंटे की आपके देश को बहुत ज्यादा जरूरत है।”

- श्रद्धेय भाई राजीव दीक्षित जी

वंदे मातरम...